

07

# भारत के “चोटी” के स्कूलों में शिक्षा में कला

,d x|.koÙkk f'k{kk vè; ;u

वैजयन्ती शंकर
अर्चना द्विवेदी

विश्व भर की शिक्षा नीतियों ने लगभग हमेशा ही विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सह–शैक्षिक क्षेत्रों जैसे कि कला एवं खेल आदि का मूल्य पहचाना है। लेकिन अच्छी शिक्षा एवं गुणवत्तापूर्ण अधिगम का वातावरण किन चीजों से गठित होता है? एक दृष्टिकोण मुख्य विषयों में प्राप्त अंकों पर केन्द्रित है तो दूसरा तात्कालिक मापनीय परिणामों पर। एक अन्य दृष्टिकोण भी है–अच्छे शैक्षिक अनुभव के निर्माण के लिए स्कूल की “क्षमता”।

अन्तरराष्ट्रीय संगठनों जैसे कि यूनेस्को, यूनिसेफ तथा एशियन डेवलेपमेंट बैंक द्वारा प्रस्तावित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा रूपरेखाएँ आमतौर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समग्र परिभाषा का जिक्र करती हैं जिनमें विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक, सह–शैक्षिक एवं भाव–विषयक (मूल्य व प्रवृत्ति) परिणाम शामिल हैं। भारत की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) संज्ञानात्मक अधिगम परिणामों (जैसे कि गणित, विज्ञान, भाषा) के अलावा कला, स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा एवं शान्ति शिक्षा पर बल देती है। यह उन कारकों एवं मापदण्डों की ओर ध्यान आकर्षित करती है जो स्कूली शिक्षा के परिणामों (जैसे कि बुनियादी सुविधाएँ, पुस्तकालय और अन्य मीडिया, विद्यालय संगठन एवं संस्कृति) में योगदान देते हैं और परिणामों से परे अधिगम के अनुभव पर भी जोर देते हैं। तो वह क्या चीज है जो अच्छी शिक्षा का गठन करती है?

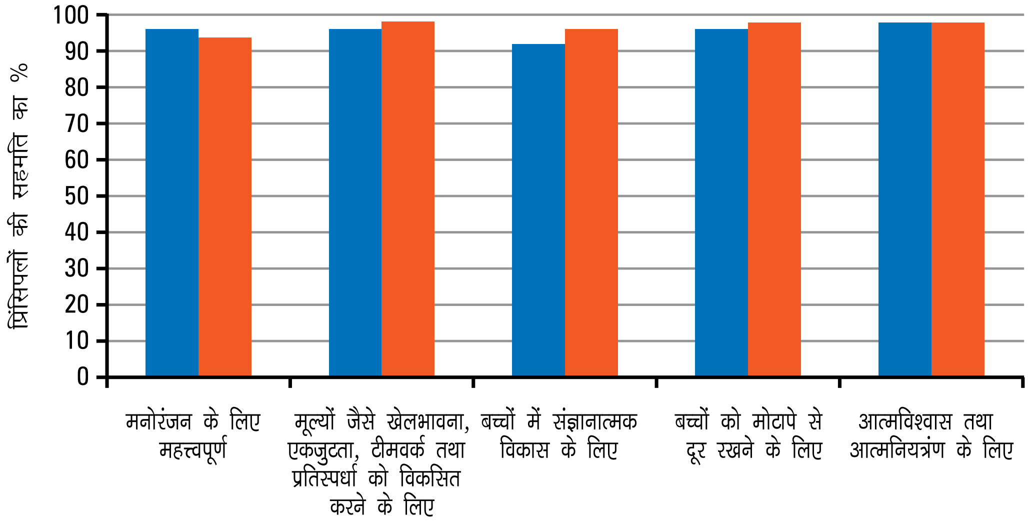
विप्रो एवं एजुकेशन इनीशिएटिव्स (EI) ने संयुक्त रूप से गुणवत्ता शिक्षा अध्ययन (QES) की अवधारणा विकसित की, जिसकी योजना बहु–वर्षीय अध्ययन के रूप में बनाई गई है ताकि शिक्षा में “गुणवत्ता” के अर्थ का विस्तार किया जा सके। साथ ही उसमें पाठ्यक्रम के विषयों के परे भी विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों को शामिल किया जा सके और अधिगम के वातावरण (स्कूल) की उन विभिन्न विशेषताओं का अध्ययन किया जा सके जिन्हें अच्छा माना जाता है।

पहले वर्ष का अध्ययन बंगलौर, चैन्नई, दिल्ली, कोलकाता और मुम्बई के “चोटी” के कुछ अँग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में किया गया। एक जनमत सर्वेक्षण के आधार पर इन स्कूलों को ग्रेडिंग दी गई। इस अध्ययन में ऐसे छः स्कूलों को भी शामिल किया गया जो इन पाँच मेट्रो शहरों तक सीमित नहीं थे और जिनकी सिफारिश विशेषज्ञों ने यह कहकर की थी कि ये स्कूल एक अलग प्रकार का अधिगम वातावरण मुहैया कराते हैं। कुल मिलाकर इस अध्ययन में 89 स्कूलों के 23,000 छात्र, 790 शिक्षक और 54 प्रधानाचार्य शामिल थे। कक्षा चार, छह और आठ के विद्यार्थियों का आकलन ऐसे टेस्ट के माध्यम से किया गया जिसमें अँग्रेजी, गणित, पर्यावरण विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के वस्तुनिष्ठ व बहु–विकल्पी प्रश्न पूछे गए थे। इन प्रश्नों के द्वारा बच्चों की अवधारणात्मक समझ एवं उच्च स्तरीय कौशल जैसे समीक्षात्मक चिन्तन, समस्या को सुलझाना तथा अनुप्रयोग के अधिग्रहण का परीक्षण किया गया। पृष्ठभूमि प्रश्नावलियों, फोकस समूह चर्चाओं तथा प्रधानाचार्यों के साथ साक्षात्कार की सहायता से अधिगम वातावरण, मूल्यों एवं विद्यार्थियों की प्रवृत्ति सम्बन्धी विभिन्न कारकों के बारे में जानकारी हासिल की गई। यहाँ प्रस्तुत हैं इस अध्ययन के कुछ दिलचस्प परिणाम।

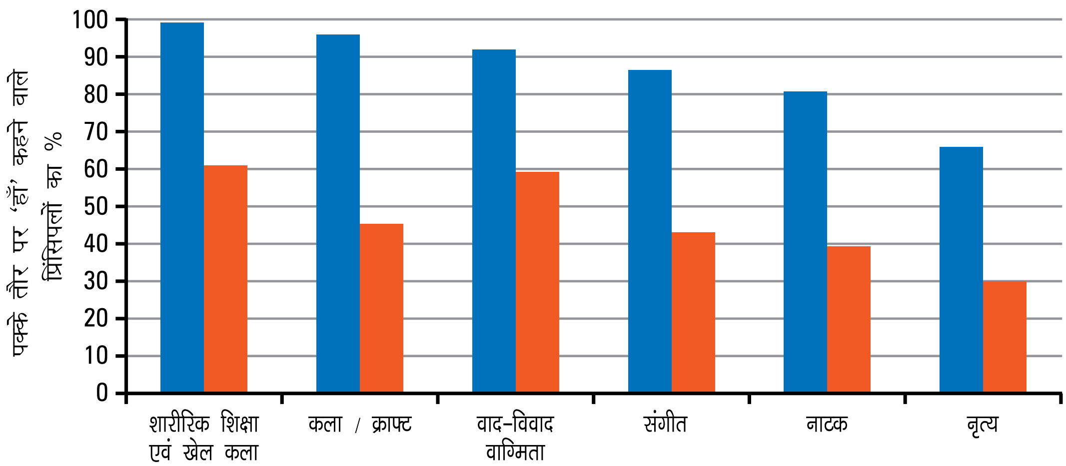
### सह–शैक्षिक कौशलों एवं पाठ्यक्रम पर प्रधानाचार्यों की सोच

70% से अधिक प्रतिभागियों ने कहा कि पाठ्यक्रम एवं विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, आत्म–नियंत्रण, खिलाड़ी भाव, एकजुटता, टीमवर्क, प्रतिस्पर्धा, स्वास्थ्य आदि के लिए सह–शैक्षिक क्षेत्र बहुत प्रासंगिक हैं। पर उनमें से आधे लोगों ने बताया कि उनका स्कूल इन क्षेत्रों से अधिक

सह-शैक्षिक कौशलों एवं पाठ्यक्रम पर प्रिंसिपलों का परिप्रेक्ष्य




पाठ्यक्रम से सह-शैक्षिक गतिविधियों का सम्बन्ध और उस पर जोर : प्रिंसिपलों का परिप्रेक्ष्य

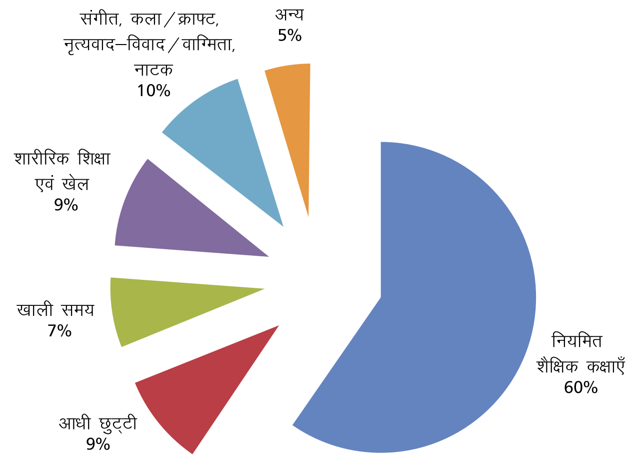



पाठ्यक्रम पर जोर देता है, जो यह दर्शाता है कि जो कुछ भी कहा जा रहा था उसका अकसर पालन नहीं होता था। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से हुई कि जिन विद्यार्थियों ने प्रश्नावली का जवाब दिया था उनमें से 30% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके स्कूल में खेल के सत्र शायद ही होते थे; यही स्थिति संगीत की भी थी (45%), कला (30%), नृत्य (50%) व नाटक (57%) और वाद–विवाद (60%)।

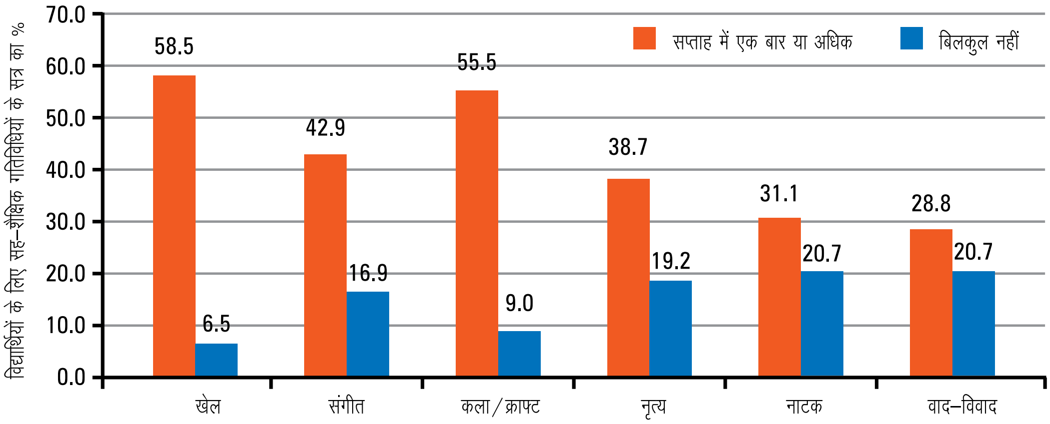
### स्कूल में सह–शैक्षिक गतिविधियों के लिए समय

एक सप्ताह में स्कूल अपने कुल समय का औसतन 9% समय शारीरिक शिक्षा/खेल को, 10% समय सह–शैक्षिक गतिविधियों जैसे गीत/कला/नृत्य/वाग्मिता/नाटक आदि को और 60% समय अकादमिक विषयों को सीखने में देते हैं। जहाँ 40–60% विद्यार्थियों ने बताया कि उनके

एक सप्ताह में स्कूल घण्टों का बँटवारा




विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए सह-शैक्षिक गतिविधियों के सत्र



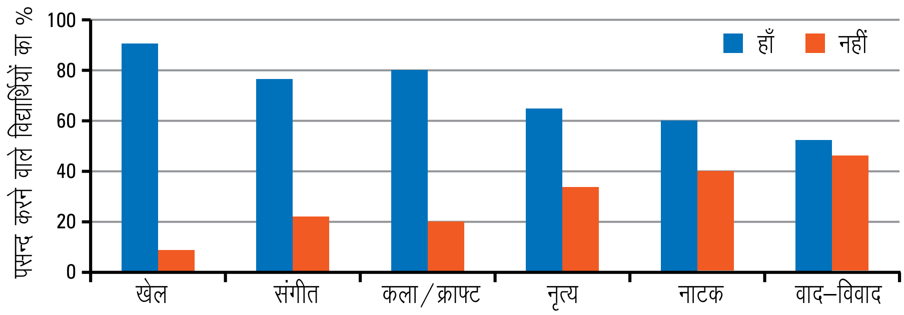

स्कूल में सप्ताह में एक बार या उससे अधिक बार खेल, कला/क्राफ्ट और संगीत के सत्र होते हैं, वहीं 16–20% विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें नाटक, नृत्य, वाद–विवाद या संगीत का अभ्यास करने का अवसर ही नहीं मिलता; 6-5% ने कभी कला/क्राफ्ट का अभ्यास नहीं किया तथा 9.0% ने कभी खेलों का अभ्यास नहीं किया।

**सह–शैक्षिक गतिविधियों के लिए संसाधन**

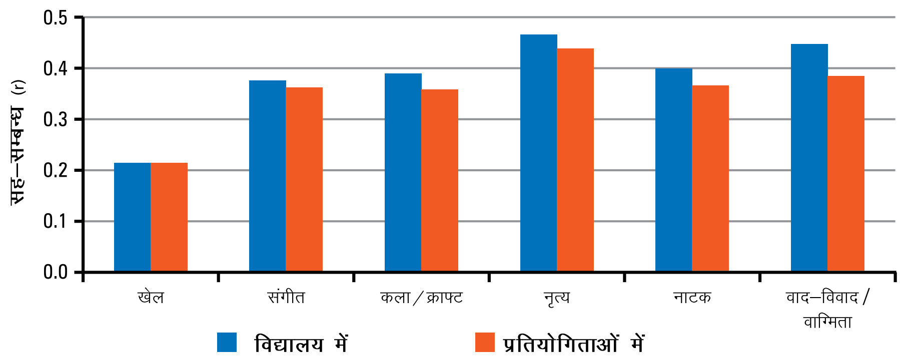
सह–शैक्षिक गतिविधियों के लिए उपकरण, मैदान/कमरा, प्रशिक्षक एवं प्रतियोगिताओं के बारे में दी जाने वाली सेवा की गुणवत्ता पर प्रधानाचार्यों की प्रतिक्रियाओं से पता चला कि–

- सह–शैक्षिक गतिविधियों के क्षेत्रों की सेवाओं (यंत्र या औजार/सामग्री, कमरा/सभागार एवं प्रशिक्षक की उपलब्धता) के बारे में जितने भी स्कूलों का परीक्षण किया गया, उनमें से लगभग सभी ने स्वयं को अच्छे या उत्कृष्ट की श्रेणी में रखा (5 में से औसत पैमाने का स्कोर 4 या उससे अधिक) ।
- नृत्य, खेल, वाद–विवाद तथा कला की सुविधाएँ नाटक या संगीत से अधिक थीं ।
- विद्यार्थी भी अन्त:स्कूल प्रतियोगिताओं की अपेक्षा अन्तरस्कूल प्रतियोगिताओं में जरा अधिक भाग लेते थे।

**विद्यार्थियों द्वारा पसन्द की जाने वाली सह–शैक्षिक गतिविधियाँ**




**विभिन्न सह–शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के बारे में विद्यार्थियों का परिप्रेक्ष्य**




### विद्यार्थियों की पसन्द और समझ

20% से कम विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें खेल, कला व संगीत जैसी सह–शैक्षिक गतिविधियाँ पसन्द नहीं, जबकि 35–47%विद्यार्थियों को नृत्य, नाटक व वाद–विवाद पसन्द नहीं थे।

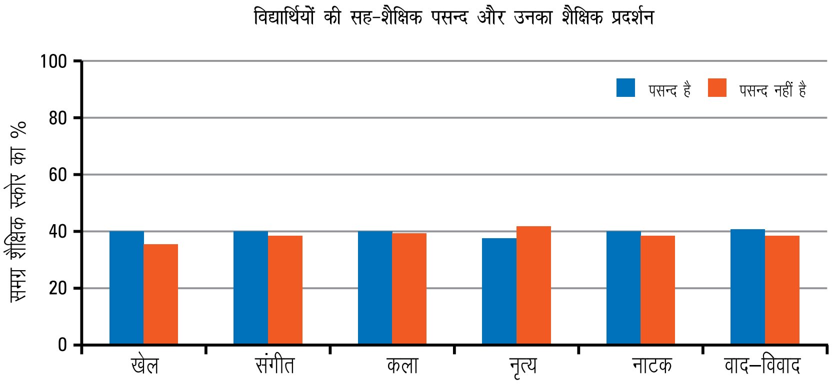
इस बात को जाँचने के लिए भी आँकड़े इकट्ठे किए गए कि सह–शैक्षिक योग्यता के बारे में विद्यार्थियों की जो आत्म–अवधारणा है क्या उसकी वजह से वे उनमें भाग लेते हैं।

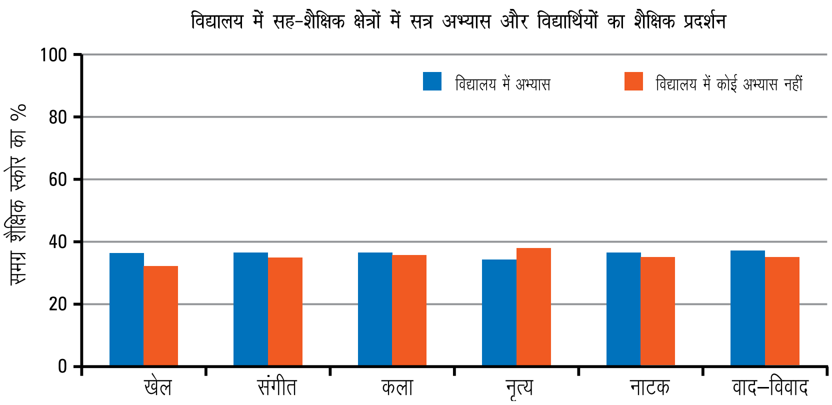
अपनी खुद की सह–शैक्षिक योग्यता के बारे में विद्यार्थियों की धारणा और नृत्य, वाद–विवाद, नाटक, कला तथा संगीत में उनकी भागीदारी के बीच थोड़ा सह–सम्बन्ध था लेकिन खेल में अपनी योग्यता की धारणा और खेल में उनकी वास्तविक भागीदारी के बीच अपेक्षाकृत कम सह–सम्बन्ध था (r = 0-2)।

### सह–शैक्षिक और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच सम्बन्ध

जो विद्यार्थी सह–शैक्षिक क्षेत्र पसन्द करते थे और जो उन्हें पसन्द नहीं करते थे उनके शैक्षिक प्रदर्शन में कोई बड़ा महत्त्वपूर्ण अन्तर इस अध्ययन में नजर नहीं आया। हालाँकि जो विद्यार्थी खेल पसन्द करते थे उन्होंने अपने विषयों के टेस्ट में अच्छा प्रदर्शन किया बनिस्पत उनके जिन्होंने कहा कि उन्हें खेल पसन्द नहीं। {सांख्यिकीय दृष्टि से अन्तर महत्त्वपूर्ण है लेकिन परिमाण सार्थक रूप से छोटा (Cohen's d)।} इसी तरह जिन विद्यार्थियों ने कहा कि उन्होंने सह–शैक्षिक क्षेत्रों में भाग लिया या जिन्होंने भाग नहीं लिया, उनके शैक्षिक प्रदर्शन में भी कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।

जिन स्कूलों का अध्ययन किया गया, उनमें से अधिकांश स्कूलों की स्थिति वही थी जैसी कि ऊपर बताई गई है, लेकिन कुछ असामान्य स्कूल ऐसे भी थे जो सह–शैक्षिक




कौशलों को बराबर का महत्त्व देते थे। एक स्कूल में तो विद्यार्थियों ने बताया कि वे कला, कुम्हारी, संगीत आदि सीखने में बराबर का समय लगाते हैं। साथ ही वे ऐसे वातावरण में समय बिताते हैं जो प्रकृति के करीब है जहाँ वे चिड़ियों को दाना खिलाते हैं, प्रकृति में टहलने के लिए जाते हैं, पेड़ों पर चढ़ते हैं—इन सबसे उन्हें बहुत शान्ति मिलती है और नए अनुभव होते हैं। एक अन्य स्कूल के बच्चों को स्कूल आना बहुत अच्छा लगता था। वे वैकल्पिक व्यवसाय पसन्द करते थे। उन्हें पाठ्येतर कक्षाएँ भी अच्छी लगती थीं जिनका सत्र सप्ताह में दो–तीन बार होता था। जिन दो स्कूलों का उल्लेख यहाँ किया गया है वे शैक्षिक क्षेत्रों में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले स्कूलों में से थे।

**चर्चा**: शोध बताते हैं कि जो विद्यार्थी ऐसे स्कूलों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं जहाँ कलाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है, उनका शैक्षिक प्रदर्शन बेहतर होता है और वे सामाजिक मूल्यों एवं प्रवृत्ति के अधिग्रहण में भी अच्छे होते हैं (Catteral, UCLA)। कला के साथ जुड़ने को गणित, पठन, संज्ञानात्मक क्षमता, समीक्षात्मक सोच और मौखिक कौशल में बढ़त के साथ सम्बद्ध किया गया है। कला को सीखने से प्रेरणा, एकाग्रता, आत्मविश्वास और टीमवर्क में सुधार होता है तथा यह लोगों को दुनिया के साथ और अधिक गहराई से जोड़ सकता है एवं उन्हें देखने का नया नजरिया देने के साथ–साथ सामाजिक बन्धनों व सामुदायिक सामंजस्य को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकता है (Rand Corporation, 2005)।

QES अध्ययन में सह–शैक्षिक पाठ्यक्रम एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन के बीच कोई निर्णायक सम्बन्ध नहीं मिला। इसका कारण यह हो सकता है कि हमारे स्कूल सह–शैक्षिक क्षेत्रों में बहुत कम काम कर रहे हैं—बच्चों को कला, संगीत, नृत्य, नाटक एवं वाद–विवाद के लिए कक्षा के कुल समय का 10% से भी कम समय दिया जाता है—तो ऐसे में इनमें और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच किसी सम्बन्ध की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इससे यह सवाल

भी सामने आता है कि क्या सारी शिक्षा को इस बात के लिए तर्कसंगत होना ही चाहिए कि वह गणित या अन्य विषयों में अच्छे प्रदर्शन के उपयोगी हो? कला शिक्षा पर उसकी अपनी योग्यता के आधार पर विचार करना चाहिए और उसे कला की खातिर ही सिखाना चाहिए तथा उसे इस आधार पर तर्कसंगत नहीं मानना चाहिए कि वह अन्य विषयों के अच्छे प्रदर्शन के लिए भी उपयोगी है।

कला किसी भी संस्कृति और हमारे बच्चों के जीवन का अनिवार्य हिस्सा है, अगर उन्होंने कला के किसी रूप में क्षमता प्राप्त नहीं की है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने सर्वांगीण व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त की है। जिन प्रधानाचार्यों का साक्षात्कार किया गया उनमें से अधिकांश ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब है विद्यार्थियों को समग्र शिक्षा प्रदान करना और इसके लिए विभिन्न सह–शैक्षिक क्षेत्र बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पर यह बात नजर नहीं आई कि स्कूल के पाठ्यक्रम में इन क्षेत्रों पर जोर दिया गया है या स्कूल के कार्य–सम्पादन के दौरान वास्तव में ऐसा किया गया है।

विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के साथ हुई फोकस समूह चर्चा से पता चला कि अधिकांश छोटे बच्चे कला या खेल के क्षेत्र में रहने की इच्छा रखते थे, जबकि बड़े बच्चे या तो व्यापार करना चाहते थे या फिर इंजीनियर की तरह तकनीकी नौकरी करना चाहते थे। स्कूल जब पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (co-curricular activity -CCA) की बात करते हैं तो कला या खेल का ही उल्लेख कर रहे होते हैं। किसी शिक्षक, विद्यार्थी, प्रधानाचार्य ने यह नहीं कहा कि उनके यहाँ सी.सी.ए. का अभाव है लेकिन इस बात का भी कोई उदाहरण नहीं था कि विद्यार्थियों को इन क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए स्कूल में पर्याप्त अनुभव प्रदान किए जा रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में उपयोगितावादी शिक्षा पर बहुत जोर दिया गया है और जीवन में आर्थिक रूप से और अधिक बेहतर होने की जरूरत ने समाज को ऐसी शिक्षा प्रदान करने के लिए अनुकूलित कर दिया है कि जो या तो कला रहित है या उसमें कला इतनी कम है कि उसे नगण्य ही मानना चाहिए।

समाज को इस तथ्य का परिज्ञान होना चाहिए कि हम अपने बच्चों को अभिव्यक्ति के वे अनूठे तरीके प्राप्त करने से वंचित कर रहे हैं जो उनके जीवन में सौन्दर्य, मिठास और आनन्द ला सकते हैं। जिन संस्कृतियों ने कला की उपेक्षा की है उन्होंने एक दरिद्र समाज को विकसित किया है और अगर हमने अपने स्कूलों में इसके बारे में कोई कदम नहीं उठाया तो हम भी वैसे ही बन जाएँगे।

**References:**


1. Catterall, James S. (2002), “The Arts and the Transfer of Learning.”
2. Deasy, Richard J. (editor) (2002), “Critical Links: Learning in the Arts and Student Achievement and Social Development”, Washington, DC: AEP.
3. National Curriculum Framework of India, 2005
4. Rand Corporation, 2005, “A Portrait in Visual Arts, Meeting the Challenges of a New Era”.



***वैजयन्ती शंकर*** *वर्तमान में एजुकेशनल इनिशिएटिव ( EI ) में स्ट्रैटेजिक रिलेशंस एण्ड बिजनेस डेवलपमेंट के लार्ज स्केल एसेसमेंट ( LSA ) विभाग का नेतृत्व करती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें 24 वर्षों से अधिक का अनुभव है। वे साइकोमेट्रिक्स के विभिन्न मुद्दों की विशेषज्ञ हैं। इसके अलावा वे विविध भाषाओं में टेस्ट निर्माण करने तथा विश्लेषण के विकसित तरीकों, जैसे कि आधुनिक आइटम रिस्पांस थ्योरी ( IRT ), जिसका प्रयोग टेस्ट निर्माण एवं बड़े पैमाने पर डेटा के निर्माण व विश्लेषण के लिए किया जाता है, की भी विशेषज्ञ हैं। उनसे* vs@ei.india.com *पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

***अर्चना द्विवेदी*** *पिछले पाँच वर्षों से एजुकेशनल इनिशिएटिव के लार्ज स्केल एसेसमेंट विभाग में रिसर्च फेलो हैं। वे प्रॉजेक्ट मैनेजमेंट, परीक्षा निर्माण एवं डेटा विश्लेषण का अनुभव रखती हैं। उनसे darchana@ei.india.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*